Read report on Summer POP: Elephant Foot Yam

झारखण्ड सरकार | IFAD Investing in rural people | JTDS | PRADAN DEVELOPMENT SERVICES

<u>गरमा पी.ओ.पी.</u>

फसल का नाम: लत्तर फसल (*Creepers*)

10 डिसमिल जमीन के लिए

लत्तर फसल :- लत्तर फसल में मुख्यतः कई फसल आते हैं जैसे- लौकी, खीर, करेला, झींगा, नेनुवा इत्यादि
उद्देश्य:

- लत्तर फसल भारत में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण सब्जी की फसल है |
- अपने पोषक गुणों ओर विविध उपयोगो के कारण लत्तर की फसल सबसे महत्वपूर्ण सब्जी है |
- लत्तर फसल की खेती सालों भर आर्थिक आय में मदद करती है |

खेती करने का मुख्य समय:

- लत्तर फसल की खेती सामान्यतः पुरे वर्ष की जाती है | गरमा मौसम में लत्तर की फसल लगाने का मुख्या समय जनवरी के दुसरे सप्ताह से फरवरी के दुसरे सप्ताह तक नर्सरी एवं रोपाई के लिए उत्तम समय माना जाता है |

उद्देश्य

- बीज उपचार करने से बीज जनित रोग से बचाव होता है |
- मिट्टी के फफूंद से नया पौधा को बचाव होता है |
- तरीका या विधि
- बीज उपचार के लिए जैविक में बिजाम्रित से या रासायनिक में बेविस्टीन 2 ग्राम/kg या थिरम 3 ग्राम/Kg का प्रयोग अच्छा होता है |

3. **बीज का दर:- 10 डिसमिल जमीन में बीज की मात्रा**

- प्रति गढ़ा में 2 से 3 पौधा के आधार पर
- लौकी :- 272 गढ़ा, बीज 100 से 120 ग्राम
- खीरा :- 272 गढ़ा, बीज 25 से 30 ग्राम
- करेला :- 272 गढ़ा, बीज 100 से 120 ग्राम
- झींगी :- 272 गढ़ा, बीज 70 से 90 ग्राम
- नेनुवा :- 272 गढ़ा, बीज 40 से 50 ग्राम

4. **नर्सरी बनाने की विधि:-**

पोलीटियूब में नर्सरी का फायदा :-

- पटवन करने में किसान के समय का बचत |
- कम बिज में ज्यादा पौधा एवं स्वस्थ पौधा |
- देख-रेख में सुविधा (समय पर पटवन, निकावान, समयपर दवा का प्रयोग, पाला से बचाव) |
- समय से पहले ज्यादा उपज-ज्यादा फायदा |
- खेत खाली नहीं रहना

पोलीटूयूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए सामग्री एवं विधि:-

सामग्री:- पोलीटूयूब, बीज, केचुवा/गोबर खाद, ट्रैकोडारमा इत्यादि

बिचड़ा तैयार करने की विधि:-

- लत्तर फसल के लिए पोलीटूयूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए केचुवा खाद एवं मिट्टी को बराबर मात्र में मिलाना है |
- 10 डिसमिल जमीन में बिचड़ा तैयार करने के लिए खाद एवं मिट्टी के मिश्रण में 200 ग्राम ट्रैकोडारमा विरिडी के चूर्ण को मिलान है |
- तैयार मिश्रण को पोलीटूयूब में भरने के बाद एक-एक बीज डालना है |
- दुसरे या तीसरे दिन (48- 72 घंटे बाद) अंकुरण आने के बाद रिडोमिल –गोल्ड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर फ़ुहारा से छिडकाव करना है |
- दो से चार पत्ता आने के बाद NPK 1919 को 80 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिला कर सिंचाई करने से पौधे की बढ़वार अच्छी होती है |
- हर 7 दिन के अन्तराल पर एडमायर (कीटनाशक) 2 ग्राम 15 लीटर पानी में या नीमास्त्र एवं साफ़ (फुफुन्दनाशक) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या बिजम्रित का छिडकाव करना चाहिए |
- 20 - 21 दिन में नर्सरी में पौधा मुख्य खेत में लगाने के लिए तैयार हो जाता है |

7. खाद/उर्वरक का प्रयोग:

- 10 डिसमिल जमीन में लत्तर फसल फसल के लिए 2-3 क्विंटल सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद खेत में अंतिम जुताई के समय मिला देना चाहिए।
- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन 70 किलोग्राम, फास्फोरस- 40 किलोग्राम एवं 25 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर के दर से देना चाहिए |

10 डिसमिल जमीन के लिए रासायनिक खाद की मात्रा:-

पोषक तत्वा		खाद की मात्रा	
• नाइट्रोजन	• 6 किलो	• यूरिया	• 10 किलो
• फोस्फोरस	• 4 किलो	• DAP	• 9 किलो
• पोटास	• 2 किलो	• पोटास	• किलो

- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन का आधा भाग तथा फोस्फोरस एवं पोटास का पूरा भाग खेत तैयार करते समय प्रारंभिक (बेसल) डोज़ के रूप में करना चाहिए | नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो समान विभाजन में देना है - रोपाई के 30 दिनों बाद और रोपाई के 50-60 दिनों बाद |
- पौधा में फुल आते समय सूक्ष्मपोषक तत्व का छिडकाव करें |

8. सिंचाई प्रबंधन:

- लत्तर फसल की अच्छी उपज के लिए खेत में कम से कम 5 से 6 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है | मिट्टी के प्रकार को देखते हुए सिंचाई की संख्या बढ़ भी सकती है |
- अगर फसल लगते समय मिट्टी में नमी कम हो तो हलकी सिंचाई जरुर करनी चाहिए |

9. निकाई – गुड़ाई एवं खर-पतवार नियंत्रण:

Leaf Curl Virus (पत्ती सिकुरण)	• संक्रमित पौधों की पत्तियां छोटी होती हैं और ऊपर की ओर मुड़ी पिली दिखने लगती हैं • पौधा बौना दिखाई देता है • आमतौर पर संक्रमित पौधों पर फुल विकसित नहीं हो पाते हैं	• संक्रमित पौधों को निकाल देना चाहिए और आगे फैलने से बचने के लिए इन्हें जमीन में दवा कर या आग में जला कर नष्ट कर देना चाहिए। • सफ़ेद मक्खी को पकड़ने के लिए Yellow sticky Trap 12 इकाई/ हे के हिसाव से खेत में लगाये। • जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए।
Fruit Borer- **फल छेदक**	• यह कीट फलों में छेदकर इनके पदार्थ को खाती हैं तथा आधी फल से बाहर लटकती नजर आती है। • एक कीट कई फलों को नुकसान पहुंचाती हैं।	• संक्रमित फलों को इकट्ठा करके इन्हें जमीन में दवा कर या आग में जला कर नष्ट कर देना चाहिए। • 12 इकाई / हेक्टेयर में फेरोमोन ट्रैप लगाएं • जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए।

जुगनूकीट 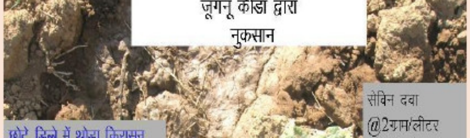	• यह कीट पत्तियों को खाता है जिससे पौधों की बढ़त कम हो जाती है एवं उपज भी प्रभाबित होता है।	• जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए।

Revision #1
Created 29 January 2024 21:08:42 by Pooja Thyagi
Updated 29 January 2024 21:10:14 by Pooja Thyagi